International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 4, April 2018
Website-www.aarf.asia,**Email**:editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

महान शास्त्रीय संगीतज्ञ पं. गनेश प्रसाद शर्मा (नादरस) द्वारा रचित श्रृंगार रस प्रधान बन्दिशों का सौन्दर्य विश्लेषण

प्रोमिला देवी
प्राध्यापिका (संगीत)
आरोही मॉडल स्कूल ग्योंग कैथल ।

भारतीय शास्त्रीय संगीत एक विशाल महायज्ञ के समान है जिसमें समय परिवर्तन के साथ-साथ अनेक विद्वानों ने अपने-अपने अनुभव और कर्म रूपी आहुतियाँ डालीं । इन महान विद्वानों के गहन चिंतन और कठोर परीश्रम के फलस्वरूप आज भारतीय संगीत भलि-भांति फल फूल रहा है । इन महान अनुभुतियों में से एक प्रसिद्ध नाम आदरणीय पं. गनेश प्रसाद शर्मा का भी है जो संगीत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज है । पं. जी ने विभिन्न रागों में अनेक भावपूर्ण बन्दिशों की रचना करके न केवल संगीत जगत में अपना नाम अमर कर लिया अपितु आने वाली पीढ़ियों के लिए भी संगीत और साहित्य का आथाह भण्डार रख छोड़ा है ।

पं. गनेश प्रसाद जी का जन्म प्रख्यात संगीत नगरी इलाहबाद में भाद्रपद पूर्णिमा, 18 सितम्बर सन् 1929 को कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ । इनकी माता का नाम श्रीमती शामप्यारी और पिता का नाम पं. पुरूषोतम लाल था । पं. गनेश प्रसाद शर्मा सच्चे संगीत गुरु, कुशल वाग्गेयकार, सफल संगीत समायोजक तथा मौलिक चिंतक हैं । पं. जी. ने भारतीय संस्कृति को अनेक कुशल मंचीय कलाकार, सुयोग्य शिक्षक, सूझवान समीक्षक तथा सहृदय श्रोता प्रदान किये है । यह सब

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

कुछ कर पाना उस साधक के लिए संभव है जो कला के लिए सच्ची निष्ठा और शुद्ध भाव से समर्पित है ।[1]

भारतीय संगीत में बन्दिश का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रहा है । बन्दिश का शब्दिक अर्थ है सीमा रेखा अथवा कोई नियम या बन्धन जिससे स्वर, लय-ताल, गायन शैली तथा काव्य रचना आदि की मर्यादा का पालन करना अपेक्षित है । साधारण भाषा में राग के स्वरूप को काव्य के शब्दों में बांधना बंदिश है ।

डा. स्वतंन्त्र शर्मा बन्दिश सम्बन्धी अपने विचार निम्नानुसार व्यक्त करती है:-

''बन्दिश भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक आवश्यक अंग है और प्रत्येक घराने के नियम, कानून, कायदे, लक्षण इन्हीं बन्दिशों से ज्ञात हो जाते है । पहले तो घरानों की ये मान्यता थी कि एक बन्दिश से राग को पूरी तरह नहीं समझा जा सकता । पहले के गुरु अपने शिष्यों को अधिक से अधिक बंदिशे सिखलाते थे जिससे उनकी सृजनात्मक प्रतिभा का विकास होता था इन पारम्परिक बन्दिशों के आधार पर राग का व्याकरण व रूप निर्भर है । बन्दिश के मुख्य समूह से ही राग पकड़ में आता है ।''[2]

डॉ. मधुरलता भट्नागर बंदिश से सम्बन्धित विचार व्यक्त करती हुई कहती हैं :-

''संगीत के स्वर और लय-ताल इन दोनों पक्षों का समन्वय स्थल ही बन्दिश है । बन्दिश वह दर्पण है जिसमें राग के स्वरुपर तथा चलन को स्पष्ट देखा जा सकता है अतः बन्दिश के द्वारा राग के अन्तः स्वरुप को एक सुनिश्चित रुप मिलता है यानि उसकी आकृति स्पष्ट रूप से सामने आती है ।''[3]

पं. गनेश प्रसाद शर्मा ने अपनी बन्दिशों में न केवल सांगीतिक बल्कि साहित्य की सुक्ष्म से सुक्ष्म विशेषताओं को समाहित किया है । पं. जी के काव्य में सहित्यक समृद्धता के साथ-साथ भावभिव्यक्ति और रस निष्पत्ति भी उच्च कोटि की रही है । इनकी बंदिशें सभी रसों की

---

1 डॉ. प्रेम सागर ग्रोवर, वाग्गेयकार के रूप में पं. गनेश प्रसाद शर्मा का हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को योगदान ।

2 डॉ. स्वतन्त्र शर्मा, संगीत में बंदिश का महत्व, छायानट 1995, पृ. 26-27 ।

3 डॉ. मधुरलता भट्नागर, बंदिश के सिद्धान्त और उसकी रचना प्रक्रिया, संगीत दिस. 1980 पृ. 05 ।

अभिव्यक्ति करने में पूर्णतया सफल रही हैं । पं. जी द्वारा रचित श्रृंगार रस प्रधान कुछ बन्दिशों के काव्य सौन्दर्य का संक्षेप मे वर्णन इस निम्न प्रकार से किया जा सकता है :-

बन्दिश - राग यमन

स्थाई - मै तो जाने न देहूँ बलमा,
तोहे राखिहों पलकन में समोए ।

अन्तरा - नैन डोर से खैंच पिया तोहे,
हिय कपाट में बंद राखिहों,
जैसे कृपन राखे धन संजोए ।।[4]

काव्य सौन्दर्य विश्लेषण -

राग यमन की प्रस्तुत बन्दिश श्रृंगार रस की अत्यन्त सुन्दर अभिव्यक्ति है । जिसमें प्रेम पुलकित नायिका का अपने प्रियतमा में तुम्हें एक पल के लिए भी स्वयं से दूर नहीं जाने दूंगी व तुम्हे अपनी पलकों में बसाकर रखूँगी । अन्तरे में अलंकारिक भाषा का प्रयोग कर कहा गया है कि हे प्रियतम मैं तुम्हें नैन रूपी डोर से खींचकर अपने हृदय में इस प्रकार बंद कर लूँगी जैसे कोई कंजूस व्यक्ति धन को पकड़कर रखता है । भाषागत लालित्य तथा भाव-सौन्दर्य की दृष्टि से बंदिश में पलकों में बसाना मुहावरेदार अभिव्यक्ति है । **नैन डोर** तथा **हिय कपाट** में रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है । प्रणय रस के सन्दर्भ में धन और कृपन की उपमा अत्यन्त आनंद प्रदान रकती है । कहने का भाव यह है कि प्रणय की इस पराकाष्ठा को पं. जी ने मुहावरों से युक्त अलंकारिक भाषा के माध्यम से व्यक्त किया है ।

बन्दिश - राग बागेश्वरी

स्थाई : मलिनियां हार गूंथ लाई, फूले-फूले फुलवा गुलाब चम्पा, बिच बिच मोंगरा
की कलियां-लरियां फूलन सेज सजाई, रजनी, सजनी, आज पिया मन भाई ।

अन्तराः अंग-अंग अंगना, अनंग सुख उमंग,
हुलसी-हुलसी हस-हस रस बतियाँ,

---

4 डॉ. पुष्पा शर्मा जी, प्राध्यापिका संगीत एस.एम.एस. खालसा लबाना गर्ल्ज कॉलेज बराड़ा, अम्बाला द्वारा सिखाई गई ।

कर–कर आज सजन सुख पाई ।।[5]

काव्य सौन्दर्य विश्लेषण –

प्रस्तुत बन्दिश श्रृंगारिक भावना से ओत–प्रोत है । बन्दिश की रचना में मधुर मिलन की रात की प्रसन्नता तथा चारूता को चित्रित किया गया है । इस मधुर मिलन की बेला पर पूरी तहर से प्रफुल्लित, विकसित गुलाब और चम्पा के फूलों को चुन–चुन कर मालिनी हार बना के ले आई है जोकि मूंगरा फूल की कलियों की लड़ियों से सुसज्जित हैं । फूलों की सेज सजा दी गई है मधुयामिनी में प्रेयसी अपने प्रियतम को भा रही है ।

अन्तरे में रचनाकार कहते हैं कि ऐसे श्रृंगारिक वातावरण में प्रिय और प्रेयसी के तन–मन में प्रीत मिलन के सुख का चाव भर गया है । प्रेयसी प्रेम रस की बातें करके अपने सजन का सुख पा रही है । **फूले फूले फुलवा** व **अंग-अंग अंगना अनंग** से अनुप्रास अलंकार की सुन्दर छटा बिखर रही है । **कलियां-लरियां**, **रजनी सजनी**, शब्दों का प्रयोग एक साथ सहित्य कौशल व सुखद अनुभूति का परिचय करवाता है ।

बन्दिश–राग–ललित

स्थाई – मंद–मंद हास करत, बैठी ब्रज वाला ।

अन्तरा आलस भरे नयन बाण, भौंहे जनु काम धनुष,

पलक झुकत छलकत मद, रतिपति कर हाला ।।[6]

काव्य सौन्दर्य विश्लेषण –

प्रस्तुत बन्दिश संयोग श्रृंगार रस से ओत–प्रोत है जिसमें सुबह नींद से जागकर बैठी हुई ब्रज युवती के रूप–सौंदर्य का सजीव चित्रण किया गया है । प्रेम–निमग्न सुन्दरी मंद–मंद मुस्कुरा रही है व मधुर मुस्कान की ज्योत्सना उसके मुख–मंडल की छटा को निखार रही है । अन्तरे की शब्द रचना अलंकारिक होने के कारण और भी अधिक रोमांचक बन गई है । कामिनी के अलसाये नयन

---

5 भेंट वार्ता पं. गनेश प्रसाद शर्मा, 214 अजीत नगर, अम्बाला कैंट, 05.12.2009 ।

6 डॉ. प्रेम सागर ग्रोवर, वाग्गयेकार के रूप में पं. गनेश प्रसाद शर्मा का हिन्दुस्तानी संगीत को योगदान ।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

बाण बन गए है और भौंहे कामदेव के धनुष का रूप धारण कर रही हैं । जब वह पलक झुकाती है ऐसा लगता है मानो मदिरा छलक गई हो । ब्रज सुन्दरी के इस रमणीय रूप को देखकर ऐसा लगता है की **रति–पति** अर्थात कामदेव ने अपने हाथों में मधु कलश पकड़ा हुआ है । अन्तरे की प्रथम पंक्ति में रूपक तथा दूसरी पंक्ति में उत्प्रेक्षा अलंकार प्रयुक्त हुआ है । **नयन बाण** में सुन्दरी के नेत्रों ने बाण का रूप धारण कर लिया है । इसीलिए यहां रूपक अलंकार है । **भौहें जनु काम धनुष** में नायिका की भौंहों पर कामदेव की कमान को आरोपित किया गया है । अत: काव्य सौन्दर्य और साहित्यक दृष्टि से बंदिश अत्यन्त समृद्ध है ।

बंदिश–राग गुणकली

स्थाई – सुन्दरवा जा, जा रे तू जा,
मोरी तोरी नाही बनेगी कुछ बात ।

अन्तरा – तुम तो निपट अपने रस गाहक,
करत रहत नित मोसों घात ।।[7]

काव्य सौन्दर्य विश्लेषण –

प्रस्तुत बन्दिश श्रृंगार रस की अत्यन्त सुन्दर रचना है जिसमें एक विलक्षण भाव देखने को मिला है कि नायिका अपने प्रियतन को बहुत प्रेम करती है परन्तु उसके मन में तनिक ग्लानि है कि उसका प्रियतम उसके प्रति पूरी तरह से समर्पित नहीं है । नायिका प्रियतम् को संम्बोधित करते हुए कहती है कि – हे मेरे सुन्दर प्रिय । तुम मेरे पास नहीं आओ, दूर चले जाओ । मेरी तुम्हारी कोई बात नहीं बनने वाली वह उलाहना देती हुई कहती है कि केवल तुम अपना मन बहलाने के लिए मेरे पास आते हो अन्यथा प्रतिदिन मुझसे घात करते हो । नायिका को लगता है कि उसके प्रियतम का मन कहीं और रमा है इसीलिए वह उससे रुष्ट प्रतीत हो रही है । प्रस्तुत बंदिश रोष और प्रेम का मिला जुला भाव व्यक्त कर अत्यन्त प्रभावशाली प्रतीत हो रही है । इसमें **सुन्दरवा** शब्द ज्योति को उद्दीप्त कर रहा है ।

7 भेंट वार्ता पं. गनेश प्रसाद शर्मा अजीत नगर, 214, 05.12.2009 ।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

बन्दिश राग धनाश्री

स्थाई –मान मनावत अपने पिया को,

ना जा तू 'नादरस' रैन अंधेरी ।

अन्तरा – जनम–जनम को ही संग बतावत,

पुन्हि–पुन्हि सोह देत अपने तन कोही ।।[8]

काव्य सौन्दर्य विश्लेषण –

प्रस्तुत बन्दिश श्रृंगार रस की सुन्दर अभिव्यक्ति है जिसमें नायिका अपने प्रयितम को स्वयं से दूर न जाने का अनुनय विनय करती है कि रात अंधेरी है । एक तो अंधेरी राम में नायिका को अकेले रहना अच्छा नहीं लग रहा, दूसरा उसके मन में प्रियतम को अंधेरे में भेजने का भय भी सता रहा है । वह बार–बार सौगंध देकर कहती है कि हमारा तो **जनम–जनम** का सम्बन्ध है । **पुन्हि–पुन्हि** में अनुप्रास और पुनरूक्ति अलंकार प्रयुक्त हुए हैं । जोकि बन्दिश के शब्द सौष्ठव को सरसता प्रदान करते है । समस्त बन्दिश भाव सौन्दर्य की समृद्धता को धारण किये हुए है ।

बन्दिश राग भटियार

स्थाई –रतनारे नैन रैन रसपगे, गोरी तोरी चाल डग मगे ।

अन्तरा – एक ही कान को कुण्डल, अधरन प्रीत को पीर,

अलस भरे मुख चन्द्र पे, सुरति ज्योति जगमगे ।।[9]

काव्य सौन्दर्य विश्लेषण –

प्रस्तुत बन्दिश का प्रतिपाद्य विषय विशुद्ध श्रृंगार रस का सजीव चित्रण है । बन्दिश शब्द संयोजन तथा प्रतीकात्मक अभिव्यंजना के फलस्वरूप इस नाजुक विषय की अभिव्यक्ति पूरी शिष्टता से सम्पन्न हुई है । रात भर प्रीत रस में निमग्न रही नायिका के सुबह उठने पर मुखरित हुए उसके रूप का सजीव चित्रण करते हुए रचनाकार कहते है कि **रतनारे नैन रस पगे** अर्थात पूरी रात प्रेम रस में निमग्न रहने के कारण नायिका की निन्द्रा पूरी नहीं हुई जिसके कारण सुबह उठने पर उसके मदमाते नयन लालिमा से युक्त नजर आते हैं तथा उसकी चाल भी डगमगाती नजर आती है ।

---

8 डॉ. प्रेम सागर ग्रोवर, वाग्गेयकार के रूप में पं. गणेश प्रसाद शर्मा का हिन्दुस्तानी संगीत को योगदान ।

9 डॉ. पुष्पा शर्मा, प्राध्यापिका संगीत, एस.एम.एस. खालसा लबाना गर्ल्ज कॉलेज बराड़ा, अम्बाला ।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)

अन्तरे में वर्णित श्रृंगारिता को आम शब्दों में बयान करना इतना सहज नहीं है वह तो कवित्व में ही सहज लगता है । **एक ही कान को कुण्डल**, **अधरन प्रीत को पीर** अर्थात प्रेम कड़ा के फलस्वरूप उसके कान का एक कुण्डल भी गिर गया है व प्रेम रस का पान किए उसके होंठ भी अपनी मादकता दिखा रहे हैं । नायिका के चन्द्रमा से **अलस भरे** मुख पे काम ज्योति अपनी आभा फैला रही है । इस प्रकार समग्र रूप से श्रृंगार रस की विशिष्ट अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत बंदिश कला की उत्तम कृति है । इस प्रकार पं. जी द्वारा रचित उपरोक्त कुछ श्रृंगार रस की बन्दिशों द्वारा सहज ही प्रतीत होता है कि पं. जी द्वारा विरचित बंदिशों में निहित साहित्यक सौन्दर्य दृष्टि विलक्षणता की धारिणी है । यह रचनात्मक सौन्दर्य–बोध अध्यन का विषय है और साधकों के लिए कला पूंजी है । सौन्दर्य की इसी दृष्टि में साहित्य और काव्य की आत्मा वास करती है । यही सौन्दर्य दृष्टि काव्य और संगीत की जननी है ।

अतः पं. गनेश प्रसाद शर्मा जी की बन्दिश श्रृंगार रस व सौन्दर्य की पराकाष्ठा हैं इसके लिए साहित्य व संगीत जगत पं. गनेश प्रसाद शर्मा जी का सदैव अभारी रहेगा ।